CURRENT GLOBAL REVIEWER

Half Yearly | UGC Approved | ISSN : 2319 - 8648
Issue XI Vol II Jan 2017 | Sr. No. 64310 | Impact Factor : 7.139

शोध विधा

प्रा. भारती एस. आर
एम. ए. नेट (संस्कृत), योग,आयुर्वेद एवं निसर्गोपचार विशेषज्ञ, जवाहर महाविदयालय अणदुर त. तुळजापूर जि. उस्मानाबाद

शोध की परिभाषा :-

शोध विवेक लगन और अजस्र परिश्रम से किया जाने वाला ज्ञान वर्धक कार्य है | अनुसन्धान किसी ज्ञान – शाखा का तटस्थ दृष्टि से एवं मनन शील मेधा से परीक्षण एवं अन्वेषण करना है। शोध में ज्ञात – अज्ञात तथ्यों को वैज्ञानिक अध्ययन व्दारा प्रस्तुत किया जाता है शोध में दो बाते महत्त्वपूर्ण हैं | 1- अज्ञात तथ्यों को प्रकाश में लाना 2- सुव्यवस्थित निर्णय देना |

(अनुसन्धान – प्रक्रिया एवं रुपरेखा – पृ 18)
(ले.डॉ.देवीदास यशवंत इंगळे)

अनुसन्धान की प्रकृति के विविध रहस्यों की जानकारी मिलती है | आज विश्व की जो भी बहुमुखी उन्नति हुई है वह वैज्ञानिक शोध का ही फल है | सम्प्रति पाश्चात्य देशों की उन्नति का कारण वहाँ होने वाली शोध की साधना है | जो देश अविकसित एवं अर्धविकसित हैं उसके मूल में शोध के प्रति उदासीनता एवं प्रमाद है | यही अवस्था किसी समय विश्वगुरु पद हे पर विराज मान भारत वर्ष की है |

अनुसन्धान के विषय मे

कार्टर गुड नामक विद्वान ने **Methods Of Research** नामक पुस्तक में लिखा है ज्ञान के प्रति मनुष्य की आकांक्षा पूर्ति उसकी विवेक शक्ति का विकास और श्रमभार को कम करना कष्टों को दूर करना और सुख सुविधाओं का विस्तार करना ही शोध का उद्देश्य है । जीवन की समृध्दि एवं मानव के उत्कर्ष में योगदान करना शोध का लक्ष्य है | मनुष्य ने अनवरत साधना से ज्ञानार्जन किया है | परिणामस्वरूप आज मनुष्य नित्य नूतन शोध की और मार्गक्रमण कर रहा है शोध कार्य की विभिन्नतासे शोध विधाओं की प्रतिष्ठा होती है | महत्वपूर्ण प्रतीत होने वाले किसी विषय का वैज्ञानिक विधि से किया गया निष्कर्ष मूलक एव मानव चेतना का संवर्धक अध्ययन शोध है |

शोध के मूलत दो ही भेद माने गये है:

1. **मौलिक शोध |**
2. **उपायोजितशोध |**

Principal
Jawahar Arts, Science & Commerce College
Andur Tal. Tuljapur Dist. Osmanabad

CURRENT GLOBAL REVIEWER

Half Yearly | UGC Approved | ISSN : 2319 - 8648
Issue XI Vol II Jan 2017 | Sr. No. 64310 | Impact Factor : 7.139

इन दोनों में ही भेद है जो मूल साहित्य एवं अनूदित साहित्य में होता है। भरतमुनि का नाट्यशास्त्र मौलिक शोध का उदाहरण है और इसके आधार पर नाम रचना का विश्लेषण करना उपायोजित शोध का उदारण है (अनुसन्धान प्रक्रिया एवं स्वरुप प्र. 25 डॉ.देवीदास इंगळे) मानव का मन, मस्तिष्क और हृदय उन्नत बनाना और उनमें नव चेतना निर्माण करना शोध का कार्य है।

1. **विश्रृंखलित तत्वों का संयोजन :-** साहित्य में अनेक ऐसे विषय होते है जिनपर सामग्री तो विपुल होती है किन्तु वह एक स्थान पर नहीं हाती है का इतस्तत प्रसरित होती है। शोध उस बिखरी हुई सामग्री का संकलन करता है।
2. **उपलब्ध तथ्यों एवं सिद्धांतों की पुनर्स्थापना :-** शोध कार्य में जो तत्व उपलब्ध होते है उन्हें परीक्षण व्दारा पुनश्च नूतन रुपमे स्थापित करना शोध विधा है।
3. **वैज्ञानिक पद्धति का अनुसरण :-** वैज्ञानिक युग में शोध की वैज्ञानिक विधि से करना आवश्यक है | शोध को अनेक विधाओं में वेनिक शोध एक विधा है।
4. **परिस्थितिगत विचारानुसान्धानः-** परिस्थीतीगत शोध का अर्थ है तत्कालीन साहित्य पर परिस्थितियों का प्रभाव किसी भी साहित्यमें यह प्रवृत्ति दिखाई देती है इन परिस्थितियों से प्रभावित साहित्य तया विचारधाराएँ शोध कार्य का विषय बनती है।
5. **दार्शनिक शोधः-** दार्शनिक शोध का अर्थ है , दर्शन सम्बन्धी ग्रन्थों का सूक्ष्म अध्ययन प्रत्येक साहित्यधारा पर एवं विचार प्रवाह पर किसी न किसी दार्शनिक सिद्धांत का प्रभाव पड़ा है यह स्पष्ट करना शोधों का लक्ष्य होता है

अनुसंधाता विधा (शोधती विधा)

शोधक शोधात्मक विषय पर प्रेम करने वाला शोध कार्य मेरुचि रखने वाला विचारशील ज्ञानुसम्पन्न कुशाग्रबुध्दी, तीक्ष्णस्मरणशक्ती स्वतःत्र विचार धारावाला होना चाहिए |

अनुसंधाता के मौलिक गुण

1. शैक्षणिक योग्यता |
2. जिज्ञासा |
3. रुचि एवं तत्परता |
4. गृहित विषय का ज्ञान|
5. कार्य संलग्नता |
6. श्रमशीलता|
7. तार्किकता|
8. निरपेक्षता |
9. सारग्रही |
10. कृतज्ञता |
11. शंकाशीलता |

Principal
Jawahar Arts, Science & Commerce College,
Andur Tal. Tuljapur Dist, Osmanabad

CURRENT GLOBAL REVIEWER

Half Yearly	UGC Approved	ISSN : 2319 - 8648
Issue XI Vol II Jan 2017	Sr. No. 64310	Impact Factor : 7.139

इन दोनों में ही भेद है जो मूल साहित्य एवं अनूदित साहित्य में होता है। भरतमुनि का नाट्यशास्त्र मौलिक शोध का उदाहरण है और इसके आधार पर नाम रचना का विश्लेषण करना उपायोजित शोध का उदारण है (अनुसन्धान प्रक्रिया एवं स्वरुप प्र. 25 डॉ.देवीदास इंगळे) मानव का मन, मस्तिष्क और हृदय उन्नत बनाना और उनमें नव चेतना निर्माण करना शोध का कार्य है।

1. **विश्रृंखलित तत्वों का संयोजन :-** साहित्य में अनेक ऐसे विषय होते है जिनपर सामग्री तो विपुल होती है किन्तु वह एक स्थान पर नहीं हाती है का इतस्तत प्रसरित होती है। शोध उस बिखरी हुई सामग्री का संकलन करता है।
2. **उपलब्ध तथ्यों एवं सिद्धांतों की पुनर्स्थापना :-** शोध कार्य में जो तत्व उपलब्ध होते है उन्हें परीक्षण व्दारा पुनश्च नूतन रुपमे स्थापित करना शोध विधा है।
3. **वैज्ञानिक पद्धति का अनुसरण :-** वैज्ञानिक युग में शोध की वैज्ञानिक विधि से करना आवश्यक है | शोध को अनेक विधाओं में वेनिक शोध एक विधा है।
4. **परिस्थितिगत विचारानुसान्धानः-** परिस्थीतीगत शोध का अर्थ है तत्कालीन साहित्य पर परिस्थितियों का प्रभाव किसी भी साहित्यमें यह प्रवृत्ति दिखाई देती है इन परिस्थितियों से प्रभावित साहित्य तया विचारधाराएँ शोध कार्य का विषय बनती है।
5. **दार्शनिक शोधः-** दार्शनिक शोध का अर्थ है , दर्शन सम्बन्धी ग्रन्थों का सूक्ष्म अध्ययन प्रत्येक साहित्यधारा पर एवं विचार प्रवाह पर किसी न किसी दार्शनिक सिद्धांत का प्रभाव पड़ा है यह स्पष्ट करना शोधों का लक्ष्य होता है

अनुसंधाता विधा (शोधती विधा)

शोधक शोधात्मक विषय पर प्रेम करने वाला शोध कार्य मेंरुचि रखने वाला विचारशील ज्ञानुसम्पन्न कुशाग्रबुध्दी, तीक्ष्णस्मरणशक्ती स्वतःत्र विचार धारावाला होना चाहिए |

अनुसंधाता के मौलिक गुण

1. शैक्षणिक योग्यता |
2. जिज्ञासा |
3. रुचि एवं तत्परता |
4. गृहित विषय का ज्ञान|
5. कार्य संलग्नता |
6. श्रमशीलता|
7. तार्किकता|
8. निरपेक्षता |
9. सारग्रही |
10. कृतज्ञता |
11. शंकाशीलता |

Principal
Jawahar Arts, Science & Commerce College,
Andur Tal. Tuljapur Dist, Osmanabad

12. धैर्यशीलता |
13. स्वाध्याय शीलता|
14. वैचारिक स्पष्टता|
15. निर्णयात्मकता |
16. वैज्ञानिक दृष्टिकोन |
17. तटस्थता |
18. स्वास्थ्य एवं बाहय परिस्थितियों की अनुकुलता 20. भाषा एवं अभिव्यक्ति पर प्रभुत्व|

निर्देशक के गुण

1. शिक्षा सम्बन्धी योग्यता |
2. रुचि एवं तत्परता|
3. निर्देश विषय का ज्ञान |
4. स्वाध्यायशीलता |
5. संयुक्तिकता|
6. भाषा का ज्ञान
7. विषय का उचित ज्ञान |

ये सभी गुण उत्तम शोध के लिए आवश्यक है |

सहायक ग्रंथ सूची :-

१. अनुसंधान प्रक्रिया
२. निरुक्त
३. शब्दशास्त्र
४. पारिभाषिक
५. आर्षग्रंथ

Principal
Vasavi Arts, Science & Commerce College
Ambur Tal. Tuljapur Dist. Osmanabad